दक्ष®

10 अगस्त 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

REET Mains Exam.

अध्यापक सीधी भर्ती

No. 1

Grade-3rd
Level-1
(कक्षा 1 से 5)

विद्यालय विषय एवं शैक्षणिक रीति विज्ञान

(हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन)

For Section-III • Marks-50 ● For Section-IV • Marks-40

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 90 अंक सुनिश्चित करें

Special Features

- विषय-वस्तु का चित्र, व्याख्या, तालिकाओं एवं उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण
- शिक्षण विधियों, अधिगम सहायक सामग्री व मूल्यांकन विधियों के महत्वपूर्ण प्रश्न
- निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण के महत्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन
- गत वर्षों की परीक्षाओं में पूछे गए लगभग 80 % प्रश्न इस गाइड पर आधारित

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

• प्रो. बी.के. रस्तोगी • आचार्य संदीप मालाकार
• सुधीन्द्र शर्मा

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

Section-'3' विद्यालय विषय [हिन्दी] 1–54

1 शब्द-भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण) 1

1. संज्ञा ..... 1 ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 3
2. सर्वनाम ..... 4 ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 6
3. विशेषण ..... 7 ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 10
4. क्रिया ..... 11 ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 13
5. क्रिया-विशेषण ..... 14 ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 14

2 सन्धि (सन्धि के प्रकार एवं उदाहरण) 15

❖ व्यंजन-संधि के परीक्षोपयोगी उदाहरण 21
❖ विसर्ग-संधि के परीक्षोपयोगी उदाहरण 22
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 22

3 समास 24

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 28

4 शब्द-रूपांतरण 31

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 35

5 शब्द-शुद्धि 37

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 43

6 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ 45

❖ मुहावरे : परिभाषा 45
❖ लोकोक्तियाँ : अर्थ व परिभाषा 48
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 53

Section-'4' शैक्षणिक रीति विज्ञान [हिन्दी] 55–120

1 हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ 55

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 70

2 भाषायी कौशल एवं भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) 73

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 80

3 हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम 82

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 83

4 हिन्दी शिक्षण में चुनौतियाँ 85

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 90

5 हिन्दी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग 92

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 101

6 हिन्दी शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ 104

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 111

7 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण 116

❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 119

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

Section-'3' विद्यालय विषय [English] 121–185

1 Articles (आर्टिकल्स) 121
- ❖ Article Determiners 121
- ❖ The Indefinite Article 'A'/'An' is Not Used 122
- ❖ Use of The Definite Article 'The' 123
- ❖ Objective Type Questions with Answers 126

2 Tense (काल) 128
- ❖ Objective Type Questions with Answers 133

3 Voice (Active and Passive) [वाच्य (कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य)] 135
- ❖ Objective Type Questions with Answers 141

4 Narration (Direct & Indirect) (प्रत्यक्ष व परोक्ष कथन) 142
- ❖ Change of Tenses 142
- ❖ No Change in Tense ... 142
- ❖ The Change of Personal Pronouns 145
- ❖ Special Rules (विशेष नियम) 147
- ❖ Objective Type Questions with Answers 153

5 Idioms and Proverbs (मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ) 156
- ❖ Idioms (मुहावरे) 156
- ❖ Objective Type Questions with Answers 159
- ❖ Proverbs (लोकोक्तियाँ) 161
- ❖ Objective Type Questions with Answers 168

6 Phrasal Verbs (वाक्यांश क्रिया) 170
- ❖ Objective Type Questions with Answers 175

7 One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन) 176
- ❖ Objective Type Questions with Answers 185

Section-'4' शैक्षणिक रीति विज्ञान [English] 186–214

1 Principles of Teaching English (अंग्रेजी शिक्षण के सिद्धान्त) 186
- ❖ Objective Type Questions with Answers 187

2 Communicative English Language Teaching (संचारात्मक भाषा शिक्षण विधि) 189
- ❖ Objective Type Questions with Answers 192

3 Methods of Teaching English (अंग्रेजी शिक्षण विधियाँ) 194
- ❖ Objective Type Questions with Answers 202

4 Difficulties in Learning English (Role of Home Language Multilingualism) अंग्रेजी सीखने में कठिनाइयाँ (मातृभाषा व बहुभाषावाद की भूमिका) 205
- ❖ Objective Type Questions with Answers 208

5 Methods of Evaluation, Remedial Teaching (मूल्यांकन की विधियाँ एवं उपचारात्मक शिक्षण) 209
- ❖ Objective Type Questions with Answers 212

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

Section-'3' विद्यालय विषय (गणित) 215–294

1 पूर्ण संख्याएँ, अभाज्य और भाज्य संख्याएँ
[Whole Numbers, Prime and Composite Numbers] 215
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 216

2 गणितीय मूल संक्रियाएँ [Fundamental Mathematical Operation] ... 218
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 221

3 भिन्न की अवधारणा एवं दशमलव संख्याएँ
[Concept of Fraction & Decimal Numbers] 225
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 228

4 अभाज्य गुणनखण्ड, लघुत्तम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्तक
[Prime Factors, LCM & HCF] 231
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 234

5 प्रतिशतता [Percentage] 239
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 242

6 लाभ एवं हानि [Profit and Loss] 249
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 252

7 साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज [Simple and Compound Interest] 259
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 262

8 रेखाएँ एवं कोण [Lines and Angles] 269
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 271

9 समतलीय आकृतियों का परिमाप एवं क्षेत्रफल
[Perimeter and Area of Plane Figures] 276
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 278

10 ठोस आकृतियों का पृष्ठीय क्षेत्रफल एवं आयतन
[Surface Area and Volume of Solids] 284
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 287

Section-'4' शैक्षणिक रीति विज्ञान (गणित) 295–336

1 गणित विषय की शिक्षण विधियाँ [Mathematics Teaching Methods].... 295
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 304

2 गणित शिक्षण के उपागम [New Approach of Teaching Mathematics] 306
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 314

3 गणित शिक्षण में चुनौतियाँ [Challenges in Teaching Mathematics] . 315
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 317

4 गणित शिक्षण सहायक सामग्री एवं उपयोग
[Teaching Aids and Its Use in Math Teaching] 319
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 323

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

5 गणित शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ [Evaluation Process of Math Teaching] 325
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 331
6 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण [Diagnostic & Remedial Teaching] . 333
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 335

Section-'3' विद्यालय विषय (सामान्य विज्ञान) 337–384

1 अम्ल, क्षार और लवण [Acid, Base and Salt] 337
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 338
2 तत्व, यौगिक एवं मिश्रण [Element, Compound and Mixture] 340
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 344
3 भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन [Physical and Chemical Changes] 346
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 347
4 गति [Motion] 348
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 350
5 बल तथा गति के नियम [Law's of Force and Motion] 352
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 356
6 प्रकाश [Light] 358
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 363
7 कोशिका - संरचना एवं प्रकार्य [Cell - Structure and Function] 365
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 369
8 जीवों में श्वसन एवं परिवहन [Respiration & Transport in Organisms] . 371
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 378
9 जन्तुओं में जनन [Reproduction in Organisms] 380
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 384

Section-'4' शैक्षणिक रीति विज्ञान (सामान्य विज्ञान) 385–430

1 विज्ञान शिक्षण की विधियाँ [Methods of Teaching Science] 385
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 394
2 विज्ञान शिक्षण के उपागम [New Approach of Teaching Science] 396
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 405
3 विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री एवं उपयोग
[Teaching Aids and Its Use in Teaching Science] 407
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 413
4 विज्ञान शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ [Evaluation of Teaching Science] ... 415
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 423
5 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण [Diagnostic & Remedial Teaching] . 424
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 429

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

Section-'3' विद्यालय विषय (सामाजिक अध्ययन) 431–470

1 राजस्थान एक परिचय [An Introduction to Rajasthan] 431
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 435

2 मुगल साम्राज्य [Mughal Empire] 437
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 442

3 राजस्थान की अर्थव्यवस्था [Economy of Rajasthan] 443
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 446

4 पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप [Major Landforms of the Earth] 447
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 449

5 भारत : प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीव व वन्य जीव संरक्षण
[India : Natural Flora, Wildlife & Wildlife Conservation] 450
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 452

6 राजस्थान में कृषि [Agriculture in Rajasthan] 453
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 456

7 भारतीय संविधान [Indian Constitution] 458
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 461

8 राजस्थान का संविधान निर्माण में योगदान
[Contribution of Rajasthan in Constitution Making] 463
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 465

9 राजस्थान में लोक प्रशासन [Public Administration in Rajasthan] 466
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 469

Section-'4' शैक्षणिक रीति विज्ञान (सामाजिक अध्ययन) 471–504

1 सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति
[Concept and Nature of Social Studies] 471
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 474

2 सामाजिक अध्ययन में शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री
[Teaching Learning Aids in Social Studies] 476
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 481

3 सामाजिक अध्ययन में अध्यापन सम्बन्धी समस्याएँ
[Teaching Problems in Social Studies] 483
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 485

4 प्रायोजना कार्य [Learning Outcomes] 486
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 490

5 सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन [Evaluation in Social Studies] 492
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 497

6 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण [Diagnostic & Remedial Teaching] . 499
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 503

1 शब्द-भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण)

1. संज्ञा

रचना या व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के प्रकार—

रचना की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद किये जा सकते हैं—

(1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योग-रूढ़

(1) रूढ़ शब्द—वे शब्द जिनके खण्ड करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे—स्त्री, पत्थर, पेड़, मकान, जमीन, सड़क, पौधे, लोहा, ताँबा, रोटी, कपड़ा, घर, कुर्सी, घोड़ा, काला, जल आदि।

(2) यौगिक शब्द—वे शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से बने हैं। जैसे—विद्यालय (विद्या+आलय), नीलकमल, वसन्तोत्सव, (वसन्त+उत्सव), पानवाला (पान+वाला), हिमालय, रसोईघर, राजमहल, पूजाघर, लाट साहब, प्रतिदिन, दूधवाला, राष्ट्रपति, चिड़ीमार, मदांध आदि।

(3) योग रूढ़ शब्द—ये शब्द यौगिक की तरह बने होते हैं लेकिन अर्थ रूढ़ शब्दों की भाँति प्रकट करते हैं। जैसे—पंकज, जलद, चतुरानन, दशानन, चारपाई, चौपाया, नीलकंठ, घनश्याम, मुरारि, षडानन, रजनीचर, हिमकर आदि।

विकार या परिवर्तन की दृष्टि से शब्दों के भेद—विकार या परिवर्तन की दृष्टि से शब्दों के मुख्यतः दो भेद किये जाते हैं।

(1) विकारी शब्द—वे शब्द जो काल, लिंग, वचन, पुरुष आदि के प्रभाव से परिवर्तित होते रहते हैं, विकारी शब्द कहलाते है। हिन्दी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण विकारी शब्द हैं।

(2) अविकारी शब्द—जिन शब्दों पर काल, लिंग, वचन, पुरुष आदि का कोई प्रभाव नहीं होता उन्हें अविकारी कहा जाता है। अविकारी शब्द अव्यय भी कहलाते हैं। इनके मुख्यतः 4 भेद हैं—

(1) क्रिया विशेषण
(2) समुच्चय बोधक
(3) सम्बन्ध बोधक
(4) विस्मायादिबोधक
(5) निपात

संज्ञा शब्द

नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा वह विकारी शब्द है जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या गुण का बोध हो। ये विकारी शब्द होते हैं तथा लिंग, काल, वचन, पुरुष आदि के प्रभाव से इनके रूप में परिवर्तन होता रहता है। हिन्दी में संज्ञा मुख्यतः 3 प्रकार की होती है—

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(2) जातिवाचक संज्ञा

(3) भाववाचक संज्ञा

इनके अलावा अन्य भाषाओं में द्रव्यवाचक और समूहवाचक संज्ञा भी होती है जिन्हें हिन्दी में जातिवाचक संज्ञा में ही माना जाता है।

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञा शब्दों से किसी एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञायें बहुधा अर्थहीन होती हैं। इनके प्रयोग से जिन व्यक्ति का बोध होता है उसका प्रायः कोई भी धर्म इनसे सूचित नहीं होता। जैसे—कमलेश शब्द का अर्थ लक्ष्मी का स्वामी अर्थात् विष्णु होता है लेकिन जिस व्यक्ति का इस नाम से बोध हो वह विष्णु हो, यह आवश्यक नहीं है। ऐसे ही मीनाक्षी शब्द का अर्थ मीन जैसे नेत्र वाली है। किसी महिला का नाम मीनाक्षी होने से उसका अर्थ यह आवश्यक नहीं है कि वह मीन जैसे सुंदर नेत्र वाली हो। व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति की पहचान या सूचना के लिए केवल एक संकेत मात्र होता हैं। हालांकि कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञायें अर्थवान भी होती हैं। जैसे—ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्माण्ड आदि। व्यक्तिवाचक संज्ञा के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

(1) स्त्री-पुरुषों के नाम—जैसे—आरती, मीरा, सोनल, दीपिका, सीमा, राधा, लक्ष्मी, महेश, सुरेश, गणेश, दीपक, नर्मदा, जयप्रकाश, मीरा सुशीला, सुदामा, मीनाक्षी, नीतू, प्रतिभा, गीतांजलि, राजू, मोहन आदि।

(2) देशों के नाम—जैसे—भारत, म्यांमार, चीन, भूटान, जर्मनी, ब्राजील, रूस, मालदीव, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अमेरिका, जापान, इटली, बर्मा, बांग्लादेश, नेपाल आदि।

(3) नदियों के नाम—जैसे—सरस्वती, बनास, साबरमती, सूकड़ी, लीलड़ी, पार्वती, परवन, कालीसिन्ध, चम्बल, माही, लूनी, गंगा, यमुना, कावेरी, महानदी, गोदावरी, सिन्धु, कृष्णा, गोदावरी, नर्मदा, ताप्ती, महानदी आदि।

(4) दिशाओं के नाम—जैसे—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

(5) महासागरों के नाम—जैसे—प्रशांत महासागर, हिन्द महासागर, आर्कटिक महासागर, अंध महासागर।

(6) शहर व नगरों के नाम—जैसे—बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, अजमेर, जोधपुर, कोटा, दिल्ली, भरतपुर, अलवर, भीलवाड़ा, धौलपुर, भोपाल, ग्वालियर, नागपुर, अमृतसर, आगरा, अलीगढ़।

(7) पर्वतों के नाम—आल्पस, हिमालय, अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा।

(8) पुस्तकों के नाम—महाभारत, कुमारपाल चरित्र, कामायनी, साकेत, गीता, बाईबिल, रामायण, अर्थशास्त्र, पंचतंत्र, कादम्बरी, ऋग्वेद।

(9) दिनों के नाम—रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार।

(10) महीनों के नाम—जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर।

(11) ग्रह-नक्षत्रों के नाम—पृथ्वी, मंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, स्वाति, अभिजित, पुष्प।

4 शब्द-रूपांतरण

विशेषण विकारी होते हैं। उनके रूप में परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन तीन कारणों से आता है—

1. लिंग के कारण 2. वचन के कारण 3. कारक के कारण

1. लिंग का विशेषण पर प्रभाव

यदि मूल विशेषण आकारांत हो और विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो आकारांत विशेषण ईकारांत हो जाता है। उदाहरणतया—

मीठा	मीठी	धीमा	धीमी
विषैला	विषैली	छोटा	छोटी

इसने वाक्य-प्रयोग देखिए—

गन्ना मीठा है। **जलेबी मीठी** है।
उसका **स्वर धीमा** है। उसकी **चाल धीमी** है।
यह **साँप विषैला** है। यह **साँपिन विषैली** है।
छोटा **बच्चा** आ रहा है। **छोटी बच्ची** आ रही है।

कुछ अन्य उदाहरण

पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण	पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण
रसीला	रसीली	रेतीला	रेतीली
जहरीला	जहरीली	वैसा	वैसी
कैसा	कैसी	जैसा	जैसी
तैसा	तैसी	शर्मीला	शर्मीली
सुनहरा	सुनहरी	फुफेरा	फुफेरी
मौसेरा	मौसेरी	चमकीला	चमकीली
निचला	निचली	अगला	अगली
पिछला	पिछली	ऊपरला	ऊपरली
पथरीला	पथरीली	भगोड़ा	भगोड़ी
प्यासा	प्यासी	अच्छा	अच्छी

ध्यान देने योग्य तथ्य है कि आकारांत को छोड़कर अन्य विशेषण स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ भी अपरिवर्तित रूप में रहते हैं।

उदाहरण देखिए—

पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण	पुल्लिंग विशेषण	स्त्रीलिंग विशेषण
आदिम नर	आदिम नारी	काल्पनिक प्रसंग	काल्पनिक बात
कारुणिक प्रसंग	कारुणिक घटना	कलंकित नर	कलंकित नारी
विदेशी युवक	विदेशी युवती	क्षुधित नर	क्षुधित नारी
घायल नर	घायल नारी	चिंतित नर	चिंतित नारी

2. वचन का विशेषण पर प्रभाव

यदि मूल विशेषण आकारांत हो और विशेष्य बहुवचन (पुल्लिंग) हो तो आकारांत विशेषण एकारांत हो जाता है। उदाहरणतया—

मीठा	मीठे	विषैला	विषैले
छोटा	छोटे		

वाक्य-प्रयोग

यह बिस्कुट मीठा है।	ये बिस्कुट मीठे हैं।
यह साँप विषैला है।	ये साँप विषैले हैं।
छोटा बच्चा आएगा।	छोटे बच्चे आएँगे।

ध्यातव्य- यदि विशेष्य बहुवचन स्त्रीलिंग हो तो आकारांत विशेषण ईकारांत में परिवर्तित होता है। उदाहरणतया-

यह लड्डू मीठा है।	ये लड्डू मीठे हैं।
	ये जलेबियाँ मीठी हैं।
यह पत्ता विषैला है।	ये पत्तियाँ विषैली हैं।
	ये पत्ते विषैले हैं।
यह छोटा बच्चा नाचेगा।	ये छोटे बच्चे नाचेंगे।
	ये छोटी बच्चियाँ नाचेंगी।

अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण—

एकवचन विशेषण	बहुवचन पुल्लिंग विशेष्य	बहुवचन स्त्रीलिंग विशेष्य
चचेरा	चचेरे	चचेरी
मौसेरा	मौसेरे	मौसेरी
फुफेरा	फुफेरे	फुफेरी
ममेरा	ममेरे	ममेरी
रेतीला	रेतीले	रेतीली
वैसा	वैसे	वैसी
निचला	निचले	निचली
पिछला	पिछले	पिछली
अगला	अगले	अगली
पथरीला	पथरीले	पथरीली
चमकीला	चमकीले	चमकीली
ऊपरला	ऊपरले	ऊपरली
प्यासा	प्यासे	प्यासी
लंबा	लंबे	लंबी
ठिगना	ठिगने	ठिगनी
भगोड़ा	भगोड़े	भगोड़ी

1 ARTICLES (आर्टिकल्स)

Article Determiners

❖ **Articles are small words that are often used at the beginning of noun phrases. They belong to a group of words called 'Determiners'. (Article छोटे शब्द हैं जो प्रायः noun phrases के शुरू में प्रयुक्त होते हैं। ये Determiners का भाग है।)**

Articles And Their Uses

There are two kinds of articles in English—
(i) Indefinite Article—**A, An**
(ii) Definite Article—**The**

Note—In modern English we have to recognize one more type, **Zero Article**. Thus there are three possibilities in all—(i) Use of Indefinite Article, (ii) Use of Definite Article and (iii) Use of Zero Article. (आधुनिक अंग्रेजी में Article का नया प्रकार **Zero Article** चिह्नित किया गया है)

❖ Articles are used before nouns or with nouns so they are best learnt in relation to various kinds of nouns. (Articles का प्रयोग nouns के पहले या nouns के साथ किया जाता है इसलिए इन्हें nouns के विभिन्न प्रकारों के साथ अच्छे से सीखा जा सकता है)

❖ Here is a classification of common nouns—

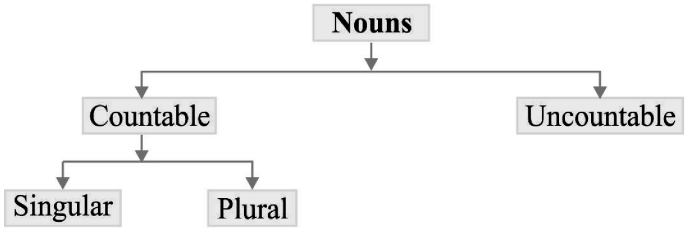

❖ Thus we get three types of nouns—
(i) **Countable Singular (CS)**—Boy, man, pen, house.
(ii) **Countable Plural (CP)**—Boys, men, pens, houses.
(iii) **Uncountable (U)**—Milk, honesty, sugar, wheat.

Use of The Indefinite Article 'A' / 'An' (अनिश्चयवाचक उपपद A, An का प्रयोग)

(i) 'A' or 'an' is the short or weakened form of one and is used before a countable singular noun which is not definite, particular or proper e.g. a boy, an elephant etc. (अनिश्चयवाचक उपपद—a या an अंग्रेजी के 'one' शब्द का संक्षिप्त रूप है। a या an का प्रयोग एकवचन की उन संज्ञाओं के पहले किया जाता है जो गणनीय (Countable) होती हैं और जो निश्चित या विशेष नहीं होतीं)
जैसे—एक लड़का, कोई हाथी या एक हाथी

(ii) 'A' is used before a word beginning with a consonant, or a vowel sound like a consonant—e.g., a man, a chair, a useful thing, a one eyed man. (A का प्रयोग एक ऐसे शब्द के पहले किया जाता है जो व्यंजन से शुरू होता है या ऐसे स्वर से शुरू होता है जो व्यंजन की ध्वनि रखता है)

(iii) 'An' is used before countable singular nouns which begin with an initial vowel sound. (an का प्रयोग एकवचन की उस संज्ञा से पूर्व किया जाता है जो गणनीय (countable) होती है और जिसकी प्रारम्भिक ध्वनि स्वर होती है।) जैसे—
An M.P., an S.D.O., an honourable man., an hour, an X-ray, a one eyed man.
M.P. की प्रारम्भिक ध्वनि **एम** है और S.D.O. की प्रारम्भिक ध्वनि **एस** है, इसलिए इनके पहले an लगा है। a one eyed man में यद्यपि one स्वर o से शुरू होता है परन्तु one की प्रारम्भिक ध्वनि **व** है, इसलिए one के पहले a लगता है।
परन्तु hotel और historical novel के पहले a और an दोनों में से कोई भी एक लग सकता है जैसे—
- a (an) hotel
- a (an) historical novel

Some Special Uses of 'A' Or 'An'

❖ The indefinite article a or an is used—

(i) Before a singular countable noun (i.e. of which there is more than one) when it is mentioned for the first time and represents no particular person or thing. (A या an का प्रयोग एकवचन गणनीय संज्ञा के पहले होता है जो अपने प्रकार की एक से अधिक होती है और किसी वाक्य में पहली बार प्रयोग की जाती है तथा किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराती) जैसे—
- A horse is an animal. (Any horse)
- I see a girl.
- A cat caught a mouse.

(ii) A and An are used before a singular countable noun which is used as an example of a class. (A or An का प्रयोग उस एकवचन गणनीय संज्ञा के पहले होता है जो पूरी जाति का बोध कराती है) जैसे—

1 PRINCIPLES OF TEACHING ENGLISH (अंग्रेजी शिक्षण के सिद्धान्त)

Teaching a language is a serious business and must be conducted carefully. Researches done in the field of linguistics, psychology and pedagogy have brought out certain principles of language teaching.

These principles of teaching/learning a language are based upon keen observation and research and experimentation. So language teachers must follow there principles to achieve effectiveness in their teaching.

Principles of Teaching English (Basic principles of language teaching)

1. **Principle of Naturalness :** A child learns his mother tongue easily because there is a natural environment in the family. But there is no such environment for learning a foreign language. So the teacher should provide a natural environment by :–
   (i) talking to students in the class and playground etc.
   (ii) encouraging students to converse with the teacher and other students in only English language.
   (iii) arranging group discussions.

   स्वाभाविकता का सिद्धान्त—बच्चा अपनी मातृभाषा को सरलता से सीखता है क्योंकि परिवार में स्वाभाविक वातावरण होता है। परन्तु एक विदेशी भाषा को सीखने के लिए स्वाभाविक वातावरण नहीं होता। इसलिए विदेशी भाषा के शिक्षक को निम्नलिखित तरीकों से यह स्वाभाविक वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए—
   (i) छात्रों से कक्षा और खेल के मैदान में लक्ष्य भाषा में वार्तालाप करके।
   (ii) छात्रों को अपने सहपाठियों और अध्यापकों से केवल लक्ष्य भाषा में वार्तालाप करने के लिए कहकर।
   (iii) समूह वार्तालाप या परिचर्चा आयोजित करके।
2. **Principle of Imitation :** A language is learnt through imitation. A teacher of English should be a model himself. His pronunciation and grammar should be correct.

   प्रतिकृति या नकल का सिद्धान्त—भाषा को नकल करके सीखा जाता है। इसलिए विदेशी भाषा के शिक्षक को स्वयं छात्रों का आदर्श होना चाहिए। अध्यापक का उच्चारण और व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान पूर्ण होना चाहिए।
3. **Principle of motivation :** The teacher should motivate the students to read and write English. This can be done through the techniques of reward, praise, grades, competition and punishment.

   अभिप्रेरणा का सिद्धान्त—अध्यापक को अपने छात्रों को अंग्रेजी पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित और उत्साहित करना चाहिए। ऐसा, अध्यापक छात्रों को पुरस्कृत करके, प्रशंसा करके, ग्रेड देकर, प्रतिस्पर्द्धा कराकर और दण्डित करके करा सकता है।
4. **Principle of Interest :** The teacher should create interest in students to learn the foreign language. This can be done by audio-visual aids, pictures, charts, gramophone records and doing different activities listening, speaking, reading, writing.

   रुचि या रोचकता का सिद्धान्त—अध्यापक को छात्रों में अंग्रेजी सीखने की रुचि उत्पन्न करनी चाहिए। यह रुचि चित्र, चार्ट, ग्रामोफोन रिकॉर्ड और अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री की सहायता से उत्पन्न की जा सकती है।
5. **Principle of Habit Formation :** Language learning is essentially a habit forming process so the following habits should be formulated in students :–
   (i) Habit of going to library.
   (ii) Habit of consulting a dictionary.
   (iii) Habit of correct pronunciation.
   (iv) Habit of reading newspaper, magazines and story books.
   (v) Habit of correct use of language through pattern practice.
   (vi) Habit of imitating and repeating.

   भाषायी आदतें विकसित करने का सिद्धान्त—भाषा सीखना वास्तव में आदत विकसित करने की प्रक्रिया होती है। इसलिए छात्रों में निम्नलिखित आदतें विकसित करनी चाहिए—
   (i) पुस्तकालय जाने की आदत।
   (ii) शब्दकोश का प्रयोग करने की आदत।
   (iii) सही उच्चारण करने की आदत।
   (iv) समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कहानी आदि पढ़ने की आदत।
   (v) वाक्य संरचना के माध्यम से भाषा के सही प्रयोग करने की आदत।
6. **Principle of Speaking or Aural-Oral Approach :** Oral practice is the quickest way of learning a language so the students should be given sufficient practice in spoken language.

   सुनने और बोलने का सिद्धान्त—मौखिक अभ्यास भाषा सीखने का सरल और तेज तरीका है। इसलिए छात्रों को विदेशी भाषा बोलने का अधिक से अधिक अभ्यास कराना चाहिए।
7. **Principle of proportion :** There are four aims of teaching and learning English – understanding, speaking, reading, and writing. So a good teacher should give equal importance to all these aspects.

1 पूर्ण संख्याएँ, अभाज्य और भाज्य संख्याएँ [Whole Numbers, Prime and Composite Numbers]

❖ **संख्या (Number)**—एकल अंक अथवा अंकों का समूह संख्या कहलाता है। गणित की मूल विषय वस्तु संख्याएँ हैं।

✧ **प्राकृत संख्याएँ (Natural Numbers) :** 1, 2, 3, 4, ...

✧ **पूर्ण संख्याएँ (Whole Numbers) :** 0, 1, 2, 3, 4, 5 .....

✧ **पूर्णांक संख्याएँ (Integer Numbers) :** $-\infty$ से $+\infty$ तक

❖ वे संख्याएँ जिनसे वस्तुओं की गणना की जाती है उन्हें धन पूर्णांक या **प्राकृतिक संख्याएँ (Natural Numbrs)** कहते हैं। इन्हें Counting Number भी कहते हैं।

उदा. 1, 2, 3, 4, 5, 6..... ∞ प्राकृतिक संख्याएँ हैं।

पूर्ववर्ती एवं परवर्ती (Successor and Predecessor)

❖ किसी प्राकृतिक संख्या में 1 जोड़ देने पर प्राप्त हुई संख्या **परवर्ती संख्या** कहलाती है एवं प्राकृतिक संख्या में से 1 घटा देने पर प्राप्त हुई संख्या **पूर्ववर्ती संख्या** कहलाती है।

जैसे— प्राकृतिक संख्या 15 में 1 जोड़ देने पर परवर्ती संख्या

$15 + 1 =$ **16** प्राप्त होती है एवं

15 में से 1 घटा देने पर पूर्ववर्ती संख्या 1

$15 - 1 =$ **14** प्राप्त होती है।

पूर्ण संख्याएँ (Whole Numbers)

❖ प्राकृत संख्याएँ शून्य के साथ मिलकर पूर्ण संख्याओं का संग्रह बनाती हैं।

❖ धनात्मक पूर्ण संख्याएँ कुल दस होती है। जैसे—0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 शून्य भी एक पूर्ण संख्या है।

❖ सभी प्राकृत संख्याएँ पूर्ण संख्याएँ हैं। सभी पूर्ण संख्याएँ प्राकृत संख्याएँ हैं। सबसे छोटी पूर्ण संख्या 0 है। सबसे बड़ी पूर्ण संख्या ∞ है।

पूर्ण संख्याओं के गुण (Properties of Whole Numbers)

❖ पूर्ण संख्याओं का योग एक पूर्ण संख्या होती है। चूँकि पूर्ण संख्याओं को जोड़ने से पूर्ण संख्या ही प्राप्त होती है, इसलिए पूर्ण संख्याओं का संग्रह योग के अंतर्गत **संवृत** (Closed) है। यह पूर्ण संख्याओं के योग का **संवृत गुण** (Closure property) कहलाता है।

❖ पूर्ण संख्याओं का गुणनफल भी एक पूर्ण संख्या ही होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि पूर्ण संख्याओं का संग्रह (निकाय) गुणन के अंतर्गत संवृत है। पूर्ण संख्याएँ के योग के अंतर्गत तथा गुणन के अंतर्गत संवृत होती हैं।

❖ पूर्ण संख्याएँ व्यवकलन (घटाने) के अंतर्गत संवृत नहीं होती है लेकिन पूर्ण संख्याएँ विभाजन (भाग) के अंतर्गत संवृत हैं।

❖ **शून्य द्वारा विभाजन**—पूर्ण संख्याओं का शून्य से विभाजन परिभाषित नहीं है।

❖ दो पूर्ण संख्याओं को किसी भी क्रम में जोड़ा जा सकता है तथा दो पूर्ण संख्याओं को किसी भी क्रम में गुणा कर सकते हैं।

❖ पूर्ण संख्याओं के लिए, योग और गुणन दोनों ही क्रमविनिमेय हैं।

❖ शून्य को पूर्ण संख्याओं के योग के लिए तत्समक अवयव (Identity element) कहते हैं। शून्य को पूर्ण संख्याओं के लिए योज्य तत्समक (Additive Identity) भी कहते हैं।

❖ गुणन की संक्रिया में भी शून्य की एक विशेष भूमिका है। किसी भी पूर्ण संख्या को शून्य से गुणा करने पर शून्य ही प्राप्त होता है।

❖ पूर्ण संख्याओं के लिए योग पर गुणन का वितरण (या बंटन) होता है।

❖ पूर्ण संख्याओं के क्रमविनिमेय, साहचर्य और वितरण गुण परिकलन को आसान बनाने में उपयोगी हैं और हम अनजाने में इनका प्रयोग करते हैं।

❖ सभी प्राकृत संख्याएँ, पूर्ण संख्याएँ भी हैं लेकिन सभी पूर्ण संख्याएँ प्राकृत संख्याएँ नहीं हैं।

❖ हम एक रेखा लेते हैं। इस पर एक बिन्दु अंकित करते हैं जिसे 0 से नामांकित करते हैं। फिर हम 0 के दाईं ओर समान अंतराल (दूरी) पर बिन्दु अंकित करते जाते हैं।

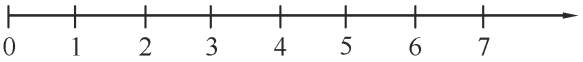

इन्हें क्रमशः 1, 2, 3 ... से नामांकित करते हैं। इस प्रकार हमें एक संख्या रेखा प्राप्त होती है जिस पर पूर्ण संख्याओं को दर्शाया जाता है। हम इस संख्या रेखा पर आसानी से संख्याओं का जोड़, व्यवकलन, गुणा और भाग जैसी संक्रियाएँ कर सकते हैं।

❖ संख्या रेखा पर दाईं ओर चलने पर संगत योग प्राप्त होता है जबकि बाईं ओर चलने पर संगत व्यवकलन प्राप्त होता है। शून्य (0) से प्रारम्भ करके समान दूरी के कदम से गुणा प्राप्त होता है।

❖ दो पूर्ण संख्याओं का योग हमेशा एक पूर्ण संख्या ही होता है। इसी प्रकार, दो पूर्ण संख्याओं का गुणनफल हमेशा एक पूर्ण संख्या होता है।

अभाज्य संख्याएँ (Prime Numbers)

❖ ऐसी संख्याएँ जो अपने तथा 1 के अतिरिक्त किसी अन्य संख्या से पूर्णतः विभाजित नहीं होती है उन्हें अभाज्य संख्याएँ कहते हैं।

जैसे - 2, 3, 5, 7, 11, 13, ... आदि संख्याएँ अभाज्य संख्याएँ हैं।

नोट—एक (1) अभाज्य संख्या नहीं है और न ही इसे भाज्य संख्या कह सकते हैं।

8 रेखाएँ एवं कोण [Lines and Angles]

रेखाएँ (Lines)

❖ **रेखा (Line):** बिन्दु की गति द्वारा बना हुआ ऐसा पथ जिसमें केवल लम्बाई होती है परन्तु चौड़ाई एवं ऊँचाई न हो, रेखा कहलाती है। जैसे AB एक रेखा है।

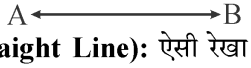

❖ **सरल रेखा (Straight Line):** ऐसी रेखा जो एक बिन्दु को दूसरे बिन्दु से बिना दिशा परिवर्तन किए न्यूनतम दूरी में मिलाये उसे सरल रेखा कहते हैं।

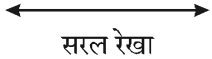
सरल रेखा

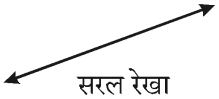
सरल रेखा

❖ **वक्र रेखा (Curved Line):** ऐसी रेखा जो एक बिन्दु को दूसरे बिन्दु से दिशा परिवर्तन करते हुए मिलाती हो उसे वक्र रेखा कहते हैं।

वक्र रेखा

वक्र रेखा

❖ **रेखाखण्ड (Line Segment):** यदि किसी रेखा PQ पर दो बिन्दु A तथा B लिया जाये तो AB को PQ का रेखाखण्ड कहते हैं।

❖ **किरण (Ray):** रेखा का ऐसा खण्ड जिसके पास एक निश्चित बिन्दु हो, किरण कहलाता है। यहाँ चित्र में AP व BQ किरण है।

❖ **सरेख एवं असरेख बिन्दु (Collinear and Non-collinear Point):** यदि तीन या अधिक बिन्दु एक ही रेखा पर स्थित हों, तो वे **सरेख बिन्दु** कहलाते हैं, अन्यथा वे **असरेख बिन्दु** कहलाते हैं।

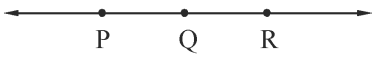

सरेख बिन्दु

असरेख बिन्दु

❖ **तिर्यक रेखा (Transversal Line):** दो या दो से अधिक रेखाओं को अलग-अलग बिन्दुओं पर काटने वाली रेखा उनकी तिर्यक रेखा कहलाती है।

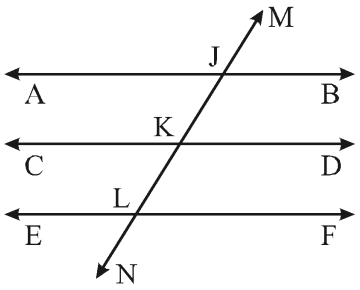

❖ यहाँ रेखा MN रेखा AB, CD व EF को अलग-अलग बिन्दुओं J, K व L पर काटती है अतः रेखा MN तिर्यक रेखा है।

❖ **संगामी रेखाएँ (Concurrent Lines):** वे रेखाएँ जो एक ही बिन्दु से गुजरती हैं संगामी रेखाएँ कहलाती हैं। जैसे–

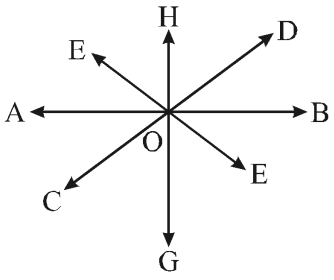

❖ यहाँ रेखा AB, CD, EF व GH एक ही बिन्दु O से गुजर रही हैं अतः ये संगामी रेखाएँ हैं।

❖ **समान्तर रेखाएँ (Parallel Lines):** एक ही तल में स्थित वे रेखाएँ जो एक-दूसरे को नहीं काटती हैं उनकी लम्बवत् दूरी समान होती है, वे समान्तर रेखाएँ कहलाती है। जैसे–रेल की पटरी।

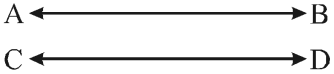

❖ **प्रतिच्छेदी रेखाएँ (Intersection Lines):** जब दो रेखाएँ आगे बढ़ाने पर किसी बिन्दु पर काटें तो वे प्रतिच्छेदी रेखाएँ कहलाती हैं। जैसे—

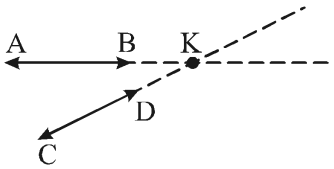

1 अम्ल, क्षार और लवण [Acid, Base and Salt]

अम्ल (Acid)

❖ ऐसे पदार्थ जिनका स्वाद खट्टा होता है उन्हें **अम्ल (अम्ल)** कहते हैं। जैसे – नींबू का रस, दही, संतरे का रस, सिरके का रस आदि। इन पदार्थों में पाये जाने वाले अम्ल प्राकृतिक अम्ल होते हैं।

तालिका : प्रकृति में पाये जाने वाले अम्ल

क्र.	अम्ल का नाम	स्रोत
1.	ऐसीटिक अम्ल	सिरका
2.	फ़ॉर्मिक अम्ल	चींटी का डंक
3.	साइट्रिक अम्ल	नींबू, संतरा
4.	लैक्टिक अम्ल	दही
5.	ऑक्सेलिक अम्ल	पालक
6.	ऐस्कॉर्बिक अम्ल (विटामिन C)	आँवला
7.	टार्टरिक अम्ल	इमली, अंगूर, कच्चे आम

क्षारक (Base)

❖ ऐसे पदार्थ जिनका स्वाद कड़वा होता है और जो स्पर्श करने पर साबुन जैसे चिकने लगते हैं **क्षारक** कहलाते हैं। जैसे – बेकिंग सोडा।

तालिका : प्रकृति में पाये जाने वाले क्षारक

क्र.	अम्ल का नाम	स्रोत
1.	कैल्सियम हाइड्रॉक्साइड	चूने का पानी
2.	अमोनियम हाइड्रॉक्साइड	मार्जक
3.	सोडियम हाइड्रॉक्साइड	साबुन
4.	पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड	साबुन
5.	मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड	दूधिया मैग्नीशियम

तालिका : अम्लीय व क्षारीय विलयनों में संकेतकों के रंग

संकेतक	अम्लीय विलयन में रंग	तटस्थ विलयन में रंग	क्षारीय विलयन में रंग
लिटमस	लाल	जामुनी	नीला
फीनाफ्थेलीन	रंग रहित	रंग रहित	गुलाबी
मिथाइल औरेंज	लाल	नारंगी	पीला

तालिका : अम्ल एवं क्षार में अन्तर

क्र.	अम्ल	क्षार
1.	स्वाद खट्टा	स्वाद कड़वा
2.	धातुओं के संक्षारक	फिसलन सहित या जैसे साबुन
3.	नीले लिटमस को लाल करना	लाल लिटमस को नीला करना
4.	क्षार के साथ मिश्रण पर कम अम्लीय हो जाते हैं।	अम्ल के साथ मिश्रण पर कम क्षारीय हो जाते हैं।

लिटमस : एक प्राकृतिक रंजक (Litmus : A Natural Dyes)

❖ सबसे सामान्य रूप से उपयोग किया जाने वाला प्राकृतिक सूचक **लिटमस** है। इसे **लाइकेनों (शैक)** से निष्कर्षित किया जाता है।

लाइकेन

❖ आसुत जल में इसका रंग मॉव (नीलशोण) होता है। जब इसे अम्लीय विलयन में मिलाया जाता है, तो यह **लाल** हो जाता है और जब क्षारीय विलयन में मिलाया जाता है, तो यह **नीला** हो जाता है।

❖ यह विलयन के रूप में अथवा कागज़ की पट्टियों के रूप में उपलब्ध होता है, जिन्हें **लिटमस पत्र** कहा जाता है। सामान्यतः यह **लाल और नीले लिटमस पत्र** के रूप में उपलब्ध होता है।

हल्दी : एक प्राकृतिक सूचक (Turmeric : A Natural Indicator)

❖ एक चम्मच हल्दी पाउडर लीजिए। इसमें थोड़ा जल मिलाकर इसका पेस्ट बनाइए।

हल्दी

❖ स्याही सोख्ता (ब्लॉटिंग पेपर) या फ़िल्टर पत्र पर हल्दी का पेस्ट लगाकर हल्दी पत्र बनाइए और उसे सुखा लीजिए। हल्दी पत्र की पतली-पतली पट्टियाँ काट लीजिए।

❖ हल्दी पत्र की पट्टी पर एक बूँद साबुन का विलयन डालिए।

❖ इसी प्रकार दिए गए विलयनों का परीक्षण कीजिए, और अपने प्रेक्षणों को सारणी में नोट कीजिए। आप अन्य पदार्थों के विलयनों से भी परीक्षण कर सकते हैं।

सूचक के रूप में गुड़हल के पुष्प (Hibiscus Flower as a Pointer)

❖ गुड़हल के पुष्प की कुछ पंखुड़ियाँ एकत्र कीजिए और उन्हें किसी बीकर में रख दीजिए। इसमें थोड़ा गरम जल मिलाइए। मिश्रण को कुछ समय तक रखिए, जब तक जल रंगीन न हो जाए। रंगीन जल को सूचक के रूप में उपयोग कीजिए। इस सूचक की पाँच-पाँच बूँदें प्रत्येक विलयन में मिलाइए।

❖ सूचक का अम्लीय, क्षारकीय और उदासीन विलयनों पर क्या प्रभाव पड़ता है? गुड़हल के पुष्प का सूचक अम्लीय विलयनों को गहरा गुलाबी (मेजेन्टा) और क्षारकीय विलयनों को हरा कर देता है।

गुड़हल के पुष्प

1 राजस्थान एक परिचय [An Introduction to Rajasthan]

- ❖ राजस्थान दिवस 30 मार्च को मनाया जाता है, क्योंकि 30 मार्च, 1949 को वृहत राजस्थान संघ का निर्माण हुआ था।
- ❖ राजस्थान का राज्य पक्षी – गोडावण 1981 में घोषित (वैज्ञानिक नाम कोरियोटिस नाइग्रीसेप)
  राजस्थान का राज्य पशु – चिंकारा 1981 में घोषित।
- ❖ 19 सितम्बर, 2014 को अधिसूचना जारी कर रेगिस्तान के जहाज ऊँट को पशुधन श्रेणी में राजकीय पशु का दर्जा दिया गया।
- ❖ 1948 में बॉस्केटबॉल को राजस्थान का राजकीय खेल घोषित किया गया।
- ❖ राजस्थान का राजकीय वृक्ष-31 अक्टूबर, 1983 में खेजड़ी राज्य वृक्ष घोषित वैज्ञानिक नाम-प्रोसोपिस सिनेरेरिया। इसे रेगिस्तान का कल्पवृक्ष भी कहा जाता है भारतीय धार्मिक ग्रन्थों में इसे शमी का वृक्ष भी कहा जाता है। खेजड़ी को राजस्थान का गौरव भी कहा जाता है।
- ❖ राजकीय पुष्प—रोहिड़ा वैानिक नाम **टिकोमेला अंडलेटा** है इसे रेगिस्तान का **सागवान** के नाम से जाना जाता है। **31 अक्टूबर, 1983** को घोषित किया गया। यह मुख्यत: प्रदेश के **पश्चिम भाग** में पाया जाता है।

राजस्थान के जिले एवं संभाग

- ❖ राज्य के पुनर्गठन के समय (1 नवम्बर, 1956) 26 जिले थे। वर्तमान में 7 संभाग एवं 33 जिले हैं।

क्रम	जिला	निर्माण की तिथि
27वाँ जिला	धौलपुर	15 अप्रैल, 1982
23वाँ जिला	बारां	10 अप्रैल, 1991
29वाँ जिला	दौसा	10 अप्रैल, 1991
30वाँ जिला	राजसमंद	10 अप्रैल, 1991
31वाँ जिला	हनुमानगढ़	12 अप्रैल, 1994
32वाँ जिला	करौली	19 अप्रैल, 1997
33वाँ जिला	प्रतापगढ़	26 अप्रैल, 2008

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था

- ❖ राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरूआत 1949 में हीरालाल शास्त्री सरकार द्वारा की गई। अप्रेल, 1962 में मोहनलाल सुखाड़िया इस संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया। जिसे 26 जनवरी 1987 को हरिदेव जोशी ने पुनः प्रारम्भ किया और भरतपुर संभाग (सबसे नया संभाग) जून, 2005 में गठन किया गया। वर्तमान में राजस्थान में 7 संभाग है।

1. **जोधपुर संभाग** → कुल 6 जिले → जोधपुर, पाली, सिरोही, जालौर, बाड़मेर तथा जैसलमेर
2. **उदयपुर संभाग** → कुल 6 जिले → उदयपुर, राजसमन्द, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़
3. **जयपुर संभाग** → [4 जिले] → जयपुर, अलवर सीकर, झुंझुनूं व दौसा
4. **कोटा संभाग** → [4 जिले] → कोटा, झालवाड़, बूँदी व बारां
5. **बीकानेर संभाग** → [4 जिले] → बीकानेर, चूरू, गंगानगर, हनुमानगढ़
6. **अजमेर संभाग** → [4 जिले] → अजमेर, टोंक भीलवाड़ा, नागौर
7. **भरतपुर संभाग** → [4 जिले] → भरतपुर, धौलपुर, करौली सवाई माधोपुर

- ❖ राजस्थान राज्य का कुल क्षेत्रफल (3,42,239 वर्ग किलोमीटर) है।
- ❖ राजस्थान का क्षेत्रफल भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.41% है।
- ❖ राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार-23° उतरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार-69°30' पूर्वी देशान्तर से 78°17' 'पूर्वी' देशान्तर है।भ 1 भ
- ❖ राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5920 किमी. है एवं अन्तर्राज्जीय सीमा 4850 किलोमीटर है एवं पाकिस्तान से लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिपफ रेखा) की लम्बाई 1070 किमी. है।
- ❖ क्षेत्रफल की दृष्टि से सबे बड़ा जिला जैसलमेर है, जो राजस्थान के क्षेत्रफल से 11.22% है।
- ❖ राजस्थान की सर्वाधिक लम्बी सीमा मध्यप्रदेश से लगती है जो 1600 किमी. की है एवं सबसे छोटी अंतर्राज्यीय सीमा पंजाब के साथ (89 km) लगती है।

1 सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति [Concept and Nature of Social Studies]

- ❖ सामाजिक अध्ययन मूलतः समाज और समाज में रहने वाले मनुष्यों का अध्ययन है।
- ❖ सामाजिक अध्ययन एक ओर मनुष्य का अध्ययन है और दूसरी ओर उसका अन्य व्यक्तियों, व्यवसायों और संस्थाओं से सम्बन्ध का अध्ययन करता है।
- ❖ समाज के अध्ययन के रूप में यह व्यक्ति, परिवार, परम्पराएँ, जातीय सम्बन्ध, वैवाहिक सम्बन्ध, शासन प्रणाली और विविध सामाजिक संस्थाओं के विकास का अध्ययन करता है और इनका अपने वातावरण से सम्बन्ध स्पष्ट करता है।
- ❖ अतः यह मनुष्य का सभी दृष्टिकोणों जैसे - ऐतिहासिक, भौगोलिक, नागरिक, आर्थिक एवं सामाजिक अन्तःसम्बन्धों का अध्ययन है।

सामाजिक विज्ञान की अवधारणा

(Concept of Social Science)

- ❖ सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन दोनों ही विषयों में मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है, परन्तु दोनों के उद्देश्यों में, स्तर में एवं गहनता में अन्तर है।
- ❖ सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत मनुष्य के सम्बन्धों का अध्ययन उच्च स्तरीय एवं खोजपूर्ण तरीके से किया जाता है, अनेक प्रकार से प्रयोग किए जाते हैं एवं अनुसंधान के अनेकों तरीके अपनाए जाते हैं। इनमें विश्व की अनेकों समस्याओं का स्पष्टीकरण एवं उनका समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
- ❖ **जेम्स हाई** के अनुसार ''मनोविज्ञान (मानव मस्तिष्क), मानशास्त्र (मानव लोकाचार), भूगोल (मानव निवास), राजनीति विज्ञान (मानव आदेश), अर्थशास्त्र (मानव अस्तित्व), समाजशास्त्र (मानव संघ), इतिहास (मानव कहानी) ये सभी शोध खोज के वैयक्तिक अनुशासन हैं, जो विषय वस्तु की दृष्टि से स्वतंत्र है।''
- ❖ अतः सामाजिक विज्ञान का सम्बन्ध मनुष्य के विशेष क्षेत्र के क्रिया-कलापों से सम्बन्धित है।

सामाजिक-विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में अन्तर

(Difference between Social Science and Social Studies)

- ❖ **ई.बी. वेस्ले वेस्ले** इन दोनों के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, ''सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं, परन्तु प्रथम (सामाजिक विज्ञान) प्रौढ़ावस्था पर तथा दूसरा (सामाजिक अध्ययन) बालकों के स्तर पर। अत: यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन मूलत: सामाजिक विज्ञानों से ही अपनी विषय-वस्तु ग्रहण करता है। .... सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है, जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं पुन: संगठित किया गया है। अत: सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक या सैद्धान्तिक अन्तर नहीं है, केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण में अन्तर है।''

	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1.	इसकी विषय-वस्तु का बौद्धिक स्तर उच्च होता है।	सामाजिक अध्ययन में निहित विषय-वस्तु का बौद्धिक स्तर सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा निम्न होता है।
2.	सामाजिक विज्ञान वयस्कों के लिए है।	सामाजिक अध्ययन विद्यालय के बालकों के लिए है।
3.	सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है।	सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा संकुचित होता है।
4.	सामाजिक विज्ञान अधिक सैद्धान्तिक है।	सामाजिक अध्ययन अधिक व्यावहारिक है।
5.	सामाजिक विज्ञान का मुख्य तत्त्व विद्वत्ता एवं सामाजिक उपयोगिता है।	सामाजिक अध्ययन का मुख्य तत्त्व निर्देशात्मक उपयोगिता (Instructional Utility) है।
6.	सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र अपने क्षेत्र विशेष तक ही सीमित है।	सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत है।

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

(Nature of Social Studies)

1. **सामाजिक अध्ययन : एकीकृत अध्ययन**—सामाजिक अध्ययन के विषय में भ्रमात्मक धारणा प्रचलित है। इस धारणा के अनुसार व्यक्ति इसे भूगोल, नागरिकशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का योग मानते हैं। वस्तुत: सामाजिक अध्ययन इनका सामूहिक नाम नहीं है, वरन् इनसे अपनी पर्याप्त सामग्री प्राप्त करके मानवीय सम्बन्धों को स्पष्ट करने का एक ढंग है। यह न केवल पूर्णत: एक नवीन विषय है, वरन् शिक्षा-जगत् में एक नवीन दृष्टिकोण भी है।

❖ इस भ्रमात्मक धारणा का निवारण 'शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोष' द्वारा बड़े ही स्पष्ट शब्दों में किया गया है, ''किसी के लिए यह निश्चय करना उचित नहीं है कि सामाजिक अध्ययन इतिहास, भूगोल तथा नागरिकशास्त्र का गणितीय योग मात्र है। निश्चय ही यह इन विषयों से पर्याप्त सामग्री प्राप्त करता है, परन्तु उसी सामग्री को ग्रहण करता है जो मानव के

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

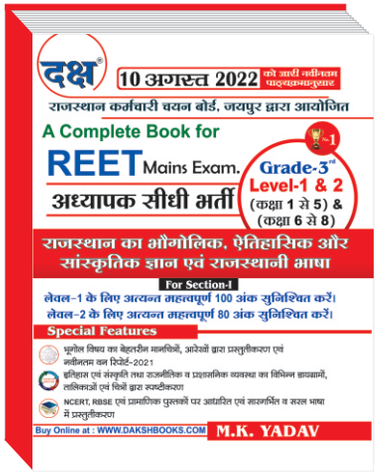

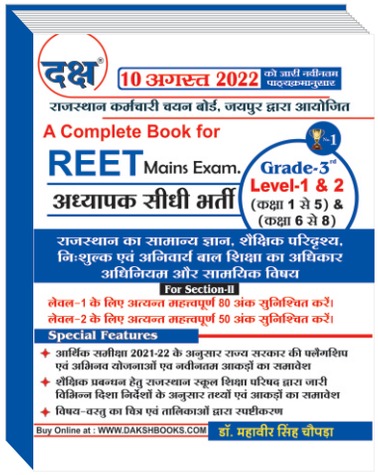

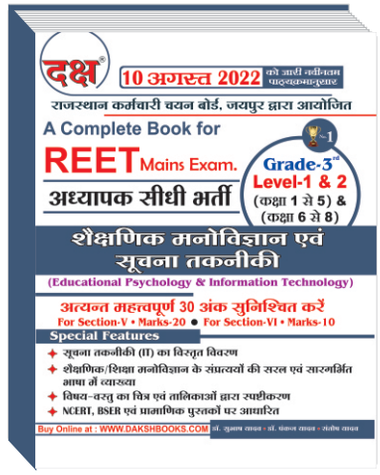

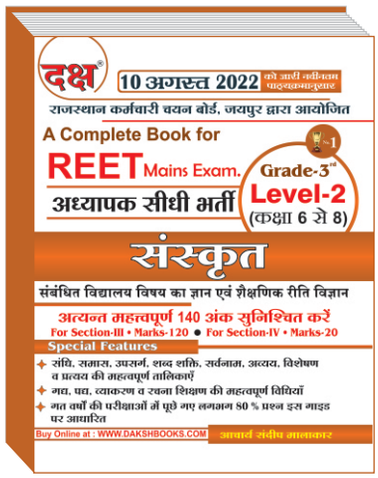

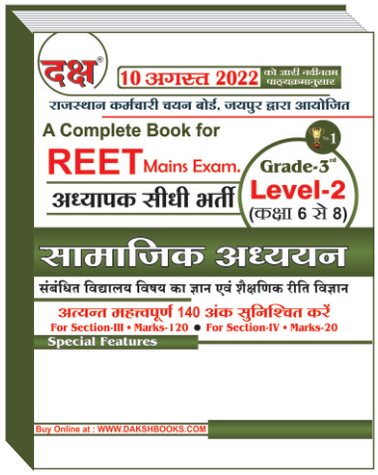

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-641 | ₹ 840/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★